पारिवारिक वातावरण एवं मूल्यों के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

आई0आई0एम0टी0 यूनिवर्सिटी, मेरठ (उ०प्र०)
के
शिक्षा संकाय के अंतर्गत
शिक्षाशास्त्र
में पीएच0डी0 की उपाधि
हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की संक्षिप्त रूपरेखा
प्रस्तुत कर्ता
शोध छात्रा

मंजु एक्का
IIMTU/A-4200

शोध निर्देशक

डॉ0 अरूण कुमार

अस्सिटेंट प्रोफेसर
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
आई0आई0एम0टी0 यूनिवर्सिटी, मेरठ
शिक्षा संकाय,

–:शोध केन्द्रः–
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय मेरठ (उ०प्र०)
____________2019__________

शोध की रूपरेखा

1. परिचय
2. शोध कथन
3. उद्देश्य
4. परिकल्पना
5. साहित्य समीक्षा
6. प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श प्रक्रिया
7. अनुसंधान की विधियाँ (आंकड़े संग्रहण के प्रयुक्त उपकरण)
8. अध्ययन का संभावित योगदान

सारांश

1. परिचय

किसी भी राष्ट्र की उन्नति और वहां का भविष्य वहां के लोगों पर निर्भर करता है, निर्भर करता है कि उनकी शिक्षा का स्तर क्या है । बालक के व्यक्तित्व पर उसके परिवार एवं वातावरण और उनके मूल्यों का प्रभाव पड़ता है। बालक के जन्म लेते ही उसके आसपास के वातावरण के साथ अंतक्रिया शुरू हो जाती है। बालक के चारों तरफ का यह वातावरण बालक में निहित प्रवृतियों एवं स्वभाव , शारीरिक एवं मानसिक संवेदनाएं, आध्यात्मिक, नैतिक गुणों एवं सांस्कृतिक आदि शक्तियों के विकसित होने में सहायता प्रदान करता है।

बाल्यावस्था मानव जीवन की प्रारम्भिक अवस्था है। जिसमें व्यक्ति की समस्त शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का विकास होता है। यह विकास काल ही व्यक्ति के भावी जीवन की पृष्ठभूमि एवं आधार तैयार करता है। आज के बालक युवारूप में कल के राष्ट्रनिर्माता है। और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूपेण समाज और राष्ट्र की बागडोर उनके हाथों में ही है।

इस प्रकार बालक या बाल्यावस्था का परिवार समाज और राष्ट्र तीनों की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। बाल्यावस्था को जीवन का ’शिक्षण काल’ माना गया है। इस अवस्था में बालक अपनी भाषा, कौशल को अपने तथा दूसरे समुदाय, परिवार या समाज को देखकर या समझकर सीखता है। और यही संयुक्त ज्ञान आगे चलकर विश्व ज्ञान एवं अध्ययन में बदल जाता है। इस प्रकार के ज्ञान तथा शिक्षण के आधार पर उसका सम्पूर्ण भविष्य नियंत्रित तथा निर्देशित होता है। मनोवैज्ञानिकों ने भी बाल्यावस्था को अधिक महत्व दिया है। बालकों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं व स्तरों तथा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक चारित्रिक गुणों एवं मूल्यों का विकास सर्वप्रथम परिवार में ही शुरू होता है।

जो समाज की मौलिक ईकाई है। जिसमें बालक की आशाएं, अभिलाषाएं, इच्छाएं एवं रुचियाँ केन्द्रित रहती है। एवं सभ्यता संस्कृति तथा धार्मिक मूल्यों

एवं नैतिक मूल्यों की जन्मस्थली प्रत्यक्ष रूप से परिवार ही है। बालक के मानसिक शक्तियों के विकास को प्रभावित करने वाले कई कारक जैसे - वंशानुक्रम, परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थितियां, स्वास्थ्य, माता पिता की शिक्षा विद्यालय का वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बालक के विकास एवं चरित्र निर्माण में वंशानुक्रम तथा पारिवारिक वातावरण सबसे महत्वपूर्ण कारक है। परिवार ही सबसे प्राचीन तथा आधारभूत अनौपचारिक संस्था के रूप में कार्य करता है । जिसके साथ बालक का जन्म से ही घनिष्ट संबंध होता है। सबसे पहली सामाजिक संस्था परिवार ही है और इसी संस्था से ही अन्य सामाजिक संस्थाओं का निर्माण एवं विकास हुआ है । पारिवारिक वातावरण के अन्दर ही बालक में सामाजिक गुणों एवं मूल्यों का विकास होता है। बालक के व्यक्तित्व के विकास में पारिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है। परिवार में बालक चलना फिरना बोलना हॅसना खेलना एवं अन्य गुणों और मूल्यों को ग्रहण करना सीखता है। इस प्रकार परिवार बालक के व्यवहारों एवं मूल्यों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने का दृढ़ माध्यम है।

घर या परिवार समाज की एक मौलिक इकाई है,जिससे बालक में व्यवहार के प्राथमिक गुण प्राप्त होते हैं, यह सबसे अधिक आधारभूत सामाजिक समूह है। इसमें साधारणतः पति - पत्नी एवं उनकी संतान होते हैं , कभी-कभी पति या पत्नी के माता-पिता भी उनके साथ रहते है। प्राचीन समाजों में नौकरों को भी परिवार का आवश्यक सदस्य माना जाता रहा है ।

परिवार से हम उन सम्बन्धों की व्यवस्था को जानते हैं, जो अभिभावक एवं उनके संतानों के मध्य में पाई जाती है।

समाज द्वारा स्वीकृत उन आकांक्षाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किए जा सकते है जिन्हें अनुबन्धन, अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यान्तीकृत किया जाता है। और जो आत्मनिष्ठ अभिमान, स्वाभिमान एवं आकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते है।

मल्यों के निर्धारक धर्म तथा संस्कृति है इनका अर्थावन दर्षन करता है। इस प्रकार मूल्यों की पृष्ठभूमि दर्षन धर्म एवं संस्कृति है। इसलिए मूल्यों की सार्वभौमिक परिभाषा देना और उनका स्पष्ट कठिन है। प्रत्येक दर्षन मूल्यों को अपने तरीके से स्पष्ट करता है। और समाज के अपने मूल्य होते है।

शाब्दिक अर्थ में व्यक्ति के गुणों को महत्व देता है जिससे व्यक्ति का महत्व बढ़ता है और समाज में आदर सम्मान होता है। यह गुण और विषेषता आन्तरिक अथवा बाह्य हो सकती है।

अनुमोदित उन आकांक्षाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते है जिन्हें प्रकरण, शिक्षा या सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है और जो व्यक्तिगत, मानकों तथा इच्छाओं के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

मूल्य का संबन्ध बालकों की आंतरिक अभिरूचियों से होता है जिनका अनुमोदन समाज द्वारा किया जाता है और उनकी वस्तुनिष्ठ परख की जाती है।

”मूल्य एक ऐसा मानव विश्वास है, जिसके आधार पर मानव प्रमुखता प्रदान करते हुए कार्य करते है।”

वास्तव में मूल्य मानवीय व्यक्तित्व को उसकी चारित्रिक गरिमा और उच्च व्यवहारिक आदर्षों की गरिमा प्रदान करते है। अतः कहा जा सकता है कि मूल्य मानव अधिकार के निर्धारक एवं निर्देषक सिद्धांत तथा मानक है। जो सामाजिक अवस्था के विभिन्न विकल्पों में से चयनित व्यवस्था के अनुरूप में कार्य करने को दिशा-निर्देष प्रदान करते है।

आज संपूर्ण संसार में मूल्यों का ह्रास होता दिखाई दे रहा है। समाज में जात-पात के भेदभाव, सद्भाव, प्रेम सहयोग का अभाव प्रतिदिन बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। इसी कारण नैतिक मूल्यों की प्रांसगिकता और अधिक बढ़ गई है। भारतीय संस्कृति का विष्व में अपना एक अलग गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। जिसका प्रभाव संपूर्ण विश्व पर पड़ता है। हमारे प्राचीन परंपरागत मूल्यों का अलग स्थान है। परंतु आज परंपरागत मूल्यों का ह्रास हो रहा है। नई शिक्षा नीति 1986 की अनुशंषा में मूल्य के गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त की गई है।

”शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छे स्वभाव एवं आदत के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।”

विद्यालय समाज का प्राथमिक रूप है अतः जिन मूल्यों का राष्ट्रीय जीवन में महत्व है। जीवन को प्रभावित करने वाले तत्व है- ईमानदारी, विनम्रता मानवीयता तथा स्वास्थ्य।

मानसिक स्वास्थ्य का सरल शब्दों में अर्थ उस स्वास्थ्य से है जिसका संबंध मानस अथवा मन से होता है। शारीरिक स्वास्थ्य जहाँ शरीर के स्वास्थ्य से अपना संबंध रखता है और इस रूप में शरीर के अंग प्रत्यांगों की उचित वृद्वि, विकास और उनके ठीक प्रकार से संचालन देख भाल और स्वास्थ्य रहने की बात करता है। उसी संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य भी मानसिक शक्तियों के उचित विकास तथा मन को स्वास्थ्य एवं सुखी बनाने के लिए आवश्यक सभी तरह की देखभाल उपायों एवं उसी रूप में व्यावहार करने की बात कहता है।

मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य है व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अपने पूर्णरूप से तालमेल बैठाते हुए कार्य करते रहना।

मानसिक स्वास्थ्य वह योग्यता है जो हमें अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों में समायोजन करने में सहायक होती है।

इस दृष्टि से मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य व्यक्ति के मस्तिष्क की उस स्वस्थ्य दशा से है जो मानव को सम्पूर्ण एवं समग्र व्यक्तित्व के रूप में संतुलित एवं संयमित व्यवहार कर स्वयं से तथा अपने वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण **संभरण** करने में सहायता करती है। बालक के संपूर्ण एवं सुविधिक विकास के लिए बेहतर मानसिक स्वास्थ्य का होना अति आवश्यक है। बेहतर मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में बालक का विकास रुक जाता है। कई भौतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से समायोजन वे ही बालक कर सकते हैं जो किसी मानसिक रोग से शिकारग्रस्त नहीं है । इसी प्रकार मानसिक रूप से अस्वस्थ्य एवं स्वभावात्मक प्रतिकूलताओं के कारण व्यवहार भी आवांछनीय हो जाते है। वे ऐसे कार्य एवं व्यवहार करने लगते है। जिससे दूसरों को असुविधा एवं कष्ट होता है। संक्षेप में

एक साधारण व्यक्ति का जब किसी अन्य व्यक्ति से बात-चीत, सोचने विचारने एवं व्यवहार करने का ढंग बदल जाता है तो माना जाता है कि उसका मानसिक स्वास्थ्य खराब है। विद्यालय परिवार बालक के शारीरिक विकास के साथ साथ मानसिक विकास का योग है। एवं परिवार का वातावरण भी बालक के स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है।

संक्षेप में कहा जाए तो मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो जाने पर विद्यार्थी का जीवन ही व्यर्थ हो जाता है उसकी शैक्षिक उपलब्धि और उसके व्यक्तित्व का विकास सब रुक जाता है, फलस्वरूप ऐसे विद्यार्थियों के शिक्षा के लिए किये जा रहे प्रयास भी विफल हो जाते है। एक अच्छे समाज का व्यवस्थापन करने तथा उन्नत विकास के लिए नागरिकों को बुद्धिमान, विवेकशील एवं कुशल होना बहुत आवश्यक होता है। परन्तु उनकी ये सारी विशेषताएँ उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की अनुकूलता पर निर्भर करती है।

2. समस्या कथन-

अध्ययन की आवश्यकता शोधार्थी द्वारा की गयी अनुभूति तथा संबंधित साहित्य के अध्ययन के अधार पर समस्या जिस रूप में प्रकट हुई उसका कथन निम्न प्रकार से किया गया है।

शीर्षक

“पारिवारिक वातावरण एवं मूल्यों के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन”

3. उद्देश्य -

शोध एक सोदेश्य प्रक्रिया है, प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यों का नियोजन किया जाता है। जिनका अपना विषिष्ट उद्देश्य होता है। साधारणतः शोध के तीन उद्देश्य है- सैद्धांतिक, तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक। शोध कार्य के द्वारा नवीन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है या किसी नवीन व्यावहारिकता को प्रस्तुत किया जाता है। अतः इस अध्ययन के भी निम्न उद्धेष्य है-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं विभिन्न मूल्यों में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षणिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं विभिन्न मूल्यों के में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

9. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि एवं विभिन्न मूल्यों में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

10. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध

4. परिकल्पनाः-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के विभिन्न मूल्यों के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सार्थक अंतर नहीं है।

5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं विभिन्न मूल्यों के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं विभिन्न मूल्यों के के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

9. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि एवं विभिन्न मूल्यों के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

10. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सीमांकन

समस्या का स्वरूप सामान्यतः अधिक व्यापक है । समस्या का व्यावहारिक रूप से अध्ययन करने के लिए उसका सीमांकन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है चूंकि समय एवं साधन किसी भी समस्या के अध्ययन को प्रभावित करते है। अतः समस्या के सीमांकन करना महत्वपूर्ण होता है।

शोध विषय की व्यापकता के कारण शोधार्थी को अपने अध्ययन को निम्नलिखित सीमाओं के भीतर समेटना पड़ा है।

1. पारिवारिक वातावरण एवं मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन हेतु साधनों एवं समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा राँची जिला को लिया जाएगा।

2. ये अध्ययन केवल राँची के माध्यमिक विद्यालयों के 10 वीं कक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं पर किया जाएगा।

3. यह अध्ययन केवल हिन्दी माध्यम के विद्यालय के विद्यार्थी पर किया जाएगा।

4. शोध विधि एवं उपकरण की सीमाएं अध्ययन की सीमाएं है।

5. प्रस्तुत अध्ययन में पारिवारिक वातावरण एवं मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

6. प्रत्येक सरकारी स्कूल के दस छात्र एवं दस छात्राओं को चुना गया।

5. साहित्य समीक्षाः-

संबंधित साहित्य से अभिप्राय उन सभी प्रकार के पुस्तकों ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाषित एवं अप्रकाषित शोध प्रवंधों एवं अभिलेखों से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपने समस्या की चयन, परिकल्पना निर्माण अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने तथा आगे बढ़ने में सहायता मिलती है।

प्रत्येक अनुसंधान एक विषेष अनोखी समस्या पर आधारित होता है तथा अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर उस समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। किसी भी शैक्षिक अनुसंधान के लिए समस्या निर्धारण उद्देश्य एवं परिकल्पना निर्माण के पष्चात अनुसंधानकत्र्ता के समक्ष यह समस्या आती है कि वह परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु किन-किन संस्थाओं, माध्यमिक विद्यालयों, मूल्यों, पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धियों आदि का चयन न्यादर्श के रूप में किया है। अनुसंधानकर्ता की सफलता के लिए संबंधित साहित्य का अध्यापन जरूरी है। क्योंकि यह अनुसंधानकर्ता के अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है। उसके ज्ञान एवं कुषलता को स्पष्ट करता है। समस्या के चुनाव और विश्लेषण में सहायक होता है तथा समय की बचत होती है। साथ ही त्रुटियों की संभावना कम रहती है। इस अध्ययन में भी अब तक हुए इस समस्या से संबंधित कुछ शोध तथा साहित्य का पुर्नरावलोकन किया जाएगा।

1. शोधकर्ता - बलवान सिंह (2018)

“माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन”

प्रस्तुत शोध में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन में धनात्मक सह संबंध पाया गया अर्थात् विद्यालय वातावरण उच्च कोटि का होने पर छात्रों की समायोजन क्षमता भी उच्च होती है। तथा निम्न कोटि के होने पर समायोजन की क्षमता भी निम्न कोटि की होती है।

2. शोधकर्ता - डॉ. योजना पातिन पाटिल (2013)

“समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका“

प्रस्तुत शोध में मूल्य आधारित षिक्षा पर बल दिया गया है। जीवन में प्रगति के लिए केवल इच्छा या आकांक्षा पर्याप्त नहीं है। सफलता मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए ताकि छात्र अपने चुने हुए क्षेत्रों में अच्छे नेता के रूप में उभर सकें।

3. शोधकर्ता - राजपाल सिंह (2013)

“प्राथमिक अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शिक्षक अभिवृति, आत्म-सामर्थ्य एवं षिक्षक प्रभावषीलता से संबंध का अध्ययन“

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन शैक्षिक अभिवृति आत्म-सामर्थ्य एवं शिक्षक प्रभावषीलता के संदर्भ में किया गया है। प्रस्तुत शोध में यह पाया गया कि षिक्षिकाओं में षिक्षकों की अपेक्षा मानसिक स्वास्थ्य के तंत्रकीय अन्तर्विरोध FFA, PHO, SOM तथा DEP के लक्षण सार्थक रूप से अधिक पाये गये।

4. शोधकर्ता - रेणु Vol- 2 (2017)

“छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन सहगामी पाठ्य क्रियाओं में भाग लेने के आधार पर“

प्रस्तुत शोध में यह पाया गया कि विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं तथा जो भाग नहीं लेते हैं उनके मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं है। तथा उनकी शैक्षणिक योग्यता पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले, भाग न लेने वालों से आगे है।

5. शोधकर्ता - मकदमा थाॅमसन अनुच्छेद संख्या - 5(2018)

“स्कूल और सामाजिक आर्थिक पृष्ठ्भूमि पर उपलब्धि-एक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य“

प्रस्तुत शोध में यह पाया गया कि यदि षिक्षा की भूमिका समाज में असमानताओं को पुनः उत्पन्न करने के लिए नहीं है तो हमें यह समझने की आवश्यकता है कि

सामाजिक आर्थिक पृष्ठ्भूमि की भूमिका अधिक स्पष्ट रूप से किया है। जबकि पिछले 50 वर्षों से बहुत अनुसंधान किया गया है और हम काफी हद तक निश्चित है कि सामाजिक आर्थिक पृष्ठ्भूमि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

6. शोधकर्ता - जसर पप्पट्टू - (2017)

परिवार के छात्रों पर एक अध्ययन और विज्ञान में शैक्षिक उपलब्धि पर विचार उपलब्ध कराने का प्रयास

प्रस्तुत शोध में यह पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पारिवारिक वातावरण, कारकों और विज्ञान कौशलों के बीच कोई संबंध नहीं है।

7. शोधकर्ता - गुंजन भाटिया (2012)

भावनात्मक के संबंध में पारिवारिक संबंधों का एक अध्ययन माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि

प्रस्तुत शोध में यह पाया गया कि पारिवारिक संबंधों और वातावरण में ही बच्चे अपने संस्कारों का उपयोग करना सीखते है और भौतिक दुनिया को समझना और सामना करना सीखते है। पारिवारिक रिश्तें कैसे बनते हैं तथा परिवार के सदस्यों एवं एक दूसरे के साथ व्यवहार कैसे करते है तथा परिवार के सभी सदस्यों के मिलने पर पारिवारिक सुख एवं आनंद का अनुभव करते है।

6. अनुसंधान की विधियाँ एवं प्रविधि-

अनुसंधान विधि अनुसंधान क्रिया को सम्पादित करने का एक ढंग है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है। अनुसंधान विधि अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित चरों को योजनानुसार नियंत्रित करने तथा समस्या का अन्तर प्राप्त करने की एक योजना संरचना एवं रणनीति होती है। यदि शोध का डिजाइन विशिष्ट और उपयुक्त तरीके से किया जाए तो प्राप्त परिणामों का सामान्यीकरण किया जा सकता है।

सी0सी0 कोकार्ड के अनुसार- ”अनुसंधान चिंतन की एक ऐसी क्रमवद्ध एवं विषिष्ट प्रविधि है जिससे विशिष्ट यंत्रों उपकरणों प्रतिक्रयाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है। ताकि एक समस्या का अधिक समुचित समाधान उपलब्ध हो सके।“

वाॅन डैलेन के अनुसार-वर्णनात्मक विधियों के 3 प्रकार बताये हैः-

1. सर्वेक्षण अध्ययन विधि

2. अंतर्संबंधों का अध्ययन

3. विकासात्मक अध्ययन

उर्पयुक्त प्रविधियों में से चयनित शोध समस्या के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि ही सर्वाधिक उपयुक्त है। अतः शोध समस्या के अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

7. प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श प्रक्रिया

प्रतिदर्श संपूर्ण या समग्रता का एक छोटा प्रतिनिधित्व है। एक प्रतिदर्श अनुसंधान पद्धति किसी दिए गए जनसंख्या से एक प्रतिदर्श प्राप्त करने के लिए एक निश्चित योजना है। यह उन तकनीकों या प्रक्रिया को संदर्भित करता है जो शोधकर्ता प्रतिदर्श के लिए मद का चयन करने में अपनाता है। प्रतिदर्श चुनने के लिए एक सावधानीपूर्वक योजना की आवश्यकता होती है।

शोध अध्ययन के परिणामों की सटीकता प्रतिदर्श की सटीक प्रक्रिया के चयन पर निर्भर करती है। वर्तमान अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श तकनीक को लागू किया जाएगा।

पहले चरण में, शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के रूप में रांची जिले के कुल 119 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में से 25 विद्यालयों का चयन कियाजाएगा। । इन 25 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन लॉटरी प्रणाली के माध्यम से किया जाएगा।

दूसरे चरण में, प्रत्येक स्कूल में से 10 पुरुष विद्यार्थियों और 10 महिला विद्यार्थियों को यादृच्छिक रूप से चुना जाएगा। इस तरह कुल छात्रों में से 500 छात्रों को वर्तमान अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में चुना जाएगा।

सांख्यिकीय विधियाँ-

शोध कार्य में आंकड़ों को प्राप्त करने के पष्चात् परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रयुक्त की जाएंगी।

1. माध्यमान

2. मानक विचलन

3. क्रांतिक अनुपात

4. टी-टेस्ट

प्रयुक्त उपकरणः-परिकल्पना के बन जाने के बाद शोध समस्या के निराकरण के लिए समस्या के परीक्षण के लिए सबंधित आंकड़ों की आवष्यकता होती है। जिसे एक उपयुक्त उपकरण ही प्राप्त किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने अपने विषय के अनुसार पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य, मूल्य एवं शौक्षिक उपलब्धि के परीक्षण के लिए निम्न मापनी का प्रयोग कियाजाएगा।

1. डॉ. श्रीमती मीनू अग्रवाल द्वारा विकसित पारिवारिक वातावरण मापनी।

2. डॉ. सुषमा किस्सरा एवं डॉ अख्तर बानो (2017) द्वारा विकसित मेंटल हेल्थ स्केल।

3. डॉ. अर्चना दुबे एवं डॉ महिंदर पाटीदार (2014) द्वारा विकसित व्यक्तिक मूल्य प्रश्नावली ।

8. अध्ययन का संभावित योगदान

शोधार्थी का उद्देष्य पारिवारिक वातावरण एवं मूल्यों का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है, क्योंकि परिवार ही बालक के प्रथम पाठषाला है। जहाँ उसका सर्वांगीण विकास होता है तथा विद्यालय दूसरी पाठशाला है यदि विद्यालयी वातावरण अच्छा होगा तो छात्र के मानसिक स्वास्थ्य, मूल्य और शैक्षिक उपलब्धि पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और छात्र का मानसिक विकास उच्च स्तर का होगा।

रूपरेखा का अध्यायवार विभाजन

प्रथम अध्यायः

प्रस्तावना

1.1 समस्या की पृष्ठभूमि

1.2 समस्या कथन

1.3 शोध समस्या में प्रयुक्त प्रमुख संकल्पनाओं का विवरण

1.4 अध्ययन की आवश्यकता

1.5 विशिष्ट शब्दों का परिभाषिकरण

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 शोध की परिकल्पनाएँ

1.8 अध्ययन का परिसीमन

दूसरा अध्यायः

संबंधित साहित्य की समीक्षा

2.1 संबंधित साहित्य की समीक्षा का प्रारूप

2.2 संबंधित साहित्य समीक्षा के उद्देश्य

2.3 संबंधित साहित्य समीक्षा की आवश्यकता

2.4 शोध साहित्य का संकल्पनात्मक विवरण

2.5 संबंधित साहित्य का संकल्पनात्मक समीक्षा

2.6 निष्कर्ष

तृतीय अध्यायः

शोध प्रविधि

3.1 अनुसंधान का प्रारूप

3.2 शैक्षिक अनुसंधान के प्रकार

3.3 वर्तमान अध्ययन के लिए शोध विधि पर विचार

3.4 अध्ययन की जनसंख्या

3.5 प्रतिदर्ष एवं प्रतिदर्ष प्रक्रिया

3.6 अनुसंधान उपकरण

3.7 अनुसंधान उपकरण का विवरण

3.8 आंकड़ा संग्रह के लिए प्रक्रिया

3.9 अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

चतुर्थ अध्यायः

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 आंकड़ों का विष्लेषण

4.2 तथ्यों की विवेचना

पंचम अध्यायः

निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

5.1 अध्ययन के निष्कर्ष

5.2 अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

5.3 भावी शोध हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

अंग्रेजी पुस्तकें:

- **Abrol, D. N. (1977).**

  A Study of Achievement Motivation in Relation Intelligence, Vocational Interests, Achievement Sex, and Socio-Economic Status.

  Doctoral thesis, Ph.D. Edu. Delhi University.

- **Agarwal, Y. P., & Kumari, M. (1975).**

  A Study of Locus of Control of Boys and Girls and various levels of Socio-Economic Status.

  K. Y. Research Journal, IX, 26-32.

- **Ahmed, A., & Vyas. (1987).**

  School climate and creativity.

  Journal of Education and Psychology, XXXXIV (4).

- **Bentley, D.A. et al. (1980).**

  Stress correlates and academic achievement.

  Retrieved from http://www.eric.ed.gov .

- **Buch, M. B. (1986).**

  Third Survey of Research in Education,

Third Survey of Research in Education, New Delhi, NCERT.

- **Buch, M. B. (1991).**

  Forth Survey of Research in Education,

  New Delhi, NCERT.

- **Cherian (1994).**

  Family reading habits and academic achievement of children from polygynous, monogamous, divorced, and nondivorced families.

  Department of Educational Research, University of Transkei, South Africa. Retrieved from http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/7808893

- **Darolia, C.R., Kumari, P. and Darolia, S. (2010).**

  Perceived organizational support, workmotivation, organizational commitment as------determinants of job performance.

  Journal of Indian Academy of Applied Psychology, 36(1), 69-78

- **Joshi, S & Srivastava, R. (2009).**

  Self-esteem and Academic Achievement of Adolescents.

  Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 35(Special Issue), 33-39.

- **Kozdras, G. (2019).**

  Education in moral values of JUDO school students.

  Ido Movement for Culture. DOI: 10.14589/ido.19.1S.8

- **Kakati, K. (2017).**

  A study on the administrative behaviour of college principals and its relation to college climate.

  Unpublished doctoral thesis, Guwahati University, Assam.

- **Kaur, J. et al. (2009).**

  Home Environment and Academic Achievement as Correlates of Selfconcept among Adolescents.

  Department of Education, Punjabi University, Patiala, Punjab, India. Retrived from http://www.krepublishers.com

- **Keyes,C.L.M.(2014).**

  Mental health as a complete state: how the salutogenic perspective completes the picture. In: Bauer GF, Hammig O. ed. Bridging occupational, organizational and public health.

  Dordrecht: Springer,179–192

हिन्दी पुस्तकें:

- कुलश्रेष्ठ एस०पी० (2008)

  शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार अनुसंधान,

  आगरा, विनोक पुस्तक मंदिर

- कुलश्रेष्ठ एस०पी० (2011)

  शिक्षा मनोविज्ञान,

  मेरठ, आर० लाल बुक डिपो

- कपिल एच०के० (2012),

  अनुसंधान विधियाँ,

  हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन आगरा,

- कपिल एच०के० (2012),

  अनुसंधान विधियाँ की कार्यप्रणाली,

  नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस

- कुलश्रेष्ठ, अरूण कुमार एण्ड नीरकमल (2011),

  विज्ञान शिक्षण,

  मेरठ, आर०लाल बुक डिपो

- कर्पुरी, अर्चना (2009)

  पारिवारिक परिवेष का बालक बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव

- कुमार, अरूण (2010)

  'शिक्षा मनोविज्ञान'

  भारती भवन

- गुप्ता एस० पी०(2010)

  आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,

  इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

- गुप्ता एस० पी०(2013)

  अनुसंधान संदर्शिका,

  इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

- गुड, वाट और स्केट्स (1987)

  ''मैथेडोलोजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च''

  एप्पलटोन सेन्चुरी कम्पनी, न्यूयार्क

- गुप्ता व नत्थूलाल (1987)

  ''मूल्यपरक शिक्षा पद्धति'

जयकृष्ण अग्रवाल, महात्मा गाँधी मार्ग, अजमेर।

- नीरू, औकम् (2018)

  'शिक्षा में मूल्य: राष्ट्रीय चरित्र'

  कला प्रकाशन।

- पाठक, पी०डी० (2013)

  'शिक्षा मनोविज्ञान'

  अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

- बेस्ट , जॉन डब्ल्यू (1959)

  "रिसर्च इन एजूकेशनल"

  प्रिन्टस हॉल एगलबूड लीप्स

- भटनागर, ए0बी0 (2003)

  'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'

  आर० लाल बुक डिपो, मेरठ

- भटनागर, सुरेश (2010)

  शिक्षा मनोविज्ञान,

  आर० लाल बुक डिपो

- शर्मा, आर0ए0 (1 जनवरी 2015)

  'शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया

  आर० लाल बुक डिपो, मेरठ

- सिंह कुमार अरूण (2010)

  आधुनिक असमान्य मनोविज्ञान

- सिंह सत्यदेव (2008)

  भारतीय समाज एवं शिक्षा

  आर०लाल बुक डिपो

- मिश्र करूणा शंकर पाण्डेय रामसकल (2009/2010)

  मूल्य शिक्षण,

  अग्रवाल पब्लिकेषन